॥ श्रीः ॥

समीक्षाचक्रवर्ति महामहोपदेशक विद्यावाचस्पति

स्व० पं० श्रीमधुसूदनशर्म्म

विरचिता

पञ्चभूतसमीक्षा

सेयम्—

तदात्मजेन पं० श्रीप्रद्युम्नशर्म्मणा

संपादिता प्रकाशिता च

प्रथमावृत्तिः ५०० } वि० सं० २००२ { मूल्यम् ॥)

॥ श्रीः ॥

❁ भूमिका ❁

विक्रम सं० १९९२ कार्तिक शुक्लपक्ष (दिसंबर सन १९३५ ई०) में काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में एक पञ्चमहाभूत परिषद बुलायी गयी थी, जिसके आयोजक बम्बई के सुप्रसिद्ध वैद्य जादवजी त्रीकमजी, वैद्य श्री कृष्णशास्त्री कवडे और जयपुर के आयुर्वेद मार्तण्ड स्वामी लक्ष्मी राम जी आदि थे। उन लोगों के आग्रह से पूज्य पिताजी भी उस अवसर पर वहां पधारे थे।

वहां दो प्रकार के दल थे। एक दल पञ्चमहाभूत वाद पर आक्षेप कर उसे व्यर्थ सिद्ध करता था और दूसरा दल उसका समर्थन करता था। दोनों दलों का वाद विवाद कै दिन तक चलता रहा। कै विद्वान् इसमें मध्यस्थ रूप से निर्वाचित किये गये थे, उनमे एक मध्यस्थ पूज्य पिताजी भी थे।

दोनों दलों के विचार सुनकर पञ्चमहाभूतवाद के संबन्ध में आपने जो उस समय अपने विचार प्रकट किये वे संक्षेप से इस लघु पुस्तिका में संस्कृत में प्रदर्शित किये गये हैं और उनका सारांश हिन्दीभाषा मे भी आरंभ मे दे दिया गया है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पञ्चमहाभूत का इसमें सुदृढ़ युक्तियों से समर्थन किया गया है। उस पञ्चमहाभूत परिषत् में सर्व सम्मति से पञ्चमहाभूत सिद्धान्त को सुस्थिर मान लिया गया था।

इस परिषत् की विस्तृत रिपोर्ट वैद्यों की ओर से सन् १९४० ई० में प्रकाशित हो चुकी है। जनता के लाभ के लिये पूज्य पिताजी के विचार भी हम प्रकाशित कर देते हैं।

विद्याधर रोड
जयपुर सिटी
११—३—४७

प्रद्युम्न शर्म्मा।

॥ श्रीः ॥

* पंचभूत समीक्षा *

प्रश्न यह है कि पृथ्वी-जल-तेज-वायु-आकाश इन पांच भूतों को भारतीय विद्वान् गण तत्व मानते हैं, किन्तु विचार करने पर यह सदर्थ सिद्ध नहीं होता क्योंकि—

(१) आकाश केवल पदार्थों का यथास्थान सन्निवेशके लिये अवकाश मात्र है, न उसमें पदार्थस्वरूप संपत्ति के लिये आयाम, विस्तार, उच्छ्राय, घनता, रा परिणाह है, न उसमें अर्थ क्रिया कारित्व है, प्रत्युत सर्व पदार्थाभावस्वरूप शून्यता है, ऐसी स्थिति में उसको किसी प्रकार का भाव कहना साहस मात्र है—

(२) इसी प्रकार यह पृथ्वी भी कोइ एक तत्व नहीं, किन्तु आज कल यन्त्रादि द्वारा पूर्ण परीक्षा से निर्णीत किये हुए जो तत्व कहकर '९२' पदार्थ सिद्ध हैं उनका ही यह एक संघात स्वरूप समष्टि है ॥

(३) इसी तरह तेज भी तत्व नहीं क्योंकि तेजमें दो भाव प्रकट होते हैं—ताप और ज्योति इनमें यह ताप तो दो पदार्थों के परस्पर संघर्षणादि जन्य केवल उन पदार्थों का अवस्था विशेष है, पृथक् कोई पदार्थ नहीं। बाकी यह ज्योति इस पृथिवी पिण्ड के चारों तरफ़ विद्यमान एटमसफीयर (Atmosphere) नाम के वायुस्तर से घर्षण विशेष होने पर कार्बन (Carbon) तत्व का ही अवस्था विशेष है, वास्तव में "अग्नि" कहकर कोइ पदार्थ सिद्ध नहीं होता ॥

(४) अब शेष रहे दो भूत जल और वायु इनमें यह जल—आक्सिजन (Oxygen) के एक परमाणु हाइड्रोजन (Hydrogen) के दो परमाणु इनके रासायनिक संयोग विशेष द्वारा उत्पन्न हुआ यौगिक पदार्थ है ॥

(५) वायु भी इसी प्रकार आक्सिजन (Oxygen) तत्व के एक परमाणु और नाइट्रोजन (Nitrogen) तत्व के दो परमाणु इनके रासायनिक संयोग से उत्पन्न होता है इससे यह भी यौगिक पदार्थ है। ऐसी स्थिति में जल और वायु ये दोनों भी अन्यान्य तत्वों से उत्पन्न हुए हैं न कि ये स्वयं मौलिक तत्व हैं ॥

तात्पर्य यह है कि इन पञ्च भूतों को तत्व मानना भारतीय विद्वानों का भ्रम मात्र है अवैज्ञानिक है ॥

इसके उत्तर में मेरा वक्तव्य इस प्रकार है—

पञ्च भूत सम्बन्ध में भारतीय वैज्ञानिक सिद्धान्त पर जो कुछ यह आक्षेप किया गया है वास्तव में वह भारतीय सिद्धान्तों को न जानकर अज्ञानता के कारण हुआ है अत एव अनुचित है। आज कल का साइंसविज्ञान पूर्ण विज्ञान नहीं, एकदेशीय विज्ञान है जो केवल मिटिरियल (Material) पदार्थों से ही संबन्ध रखता है, किन्तु इसके विपरीत यह भारतीय विज्ञान उस स्थान से प्रारम्भ होता है वा उसका परीक्षा श्रोत वहांतक पहुँच चुका है कि जहां ये भौतिक यन्त्र परीक्षायें काम नहीं देती। यदि यह समझ लिया जाय कि इस विश्व विज्ञान में केवल सब मिटीरियल (Material) पदार्थ ही विश्व का स्वरूप है तो मैं उस साइंस विज्ञान को निःसन्देह प्राइमरी साइंस कहूँगा। उसको ऐफ. ए., बी. ए. और एम ए. क्लास तक पहुँचने के लिये बहुत समय की अपेक्षा है। वर्तमान परीक्षा के साइंस में कैएक स्थान ऐसे भासित होते हैं जिनका समाधान बाइचांस (Bychance) कहकर साइंस को देना पड़ता है, परन्तु विश्वास करिए कि जिस विज्ञान में बाइचांस (Bychance) शब्द का अवलम्बन करना पड़ता है वह अपूर्ण विज्ञान है, उसके लिये अभी बहुत कुछ अनुसंधान करना वा परीक्षा करना बाकी है ऐसी स्थिती में उसको जो अभी प्राइमरी (Primary) क्लास में है एक बी. ए. एम्. ए. के मास्टर के कथन पर आक्षेप करना एक प्रकार की धृष्टता है। मैं साहस पूर्वक निवेदन करता हूं वा अनुरोध करता हूं कि वर्तमान साइंस को अपनी पूर्णता लाभ के लिए भारतीय वेद विज्ञान का पूर्ण अवलम्बन करके परीक्षा आरम्भ करना चाहिये, तभी बैज्ञानिक सब संदेह दूर होंगे, पूर्ण विज्ञान प्राप्त होगा और परीक्षा कर्म्म भी समाप्त होकर बन्द होगा। जैसा कि प्राचीन पूर्ण वैज्ञानिक भारतीय विद्वानों का सिद्धान्त है कि—

भिद्यते हृदयग्रन्थि श्छिद्यन्ते सर्व संशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्म्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥१॥ इति ।

भारतीय विज्ञान के दो विभाग हैं—पर और अवर। इन दोनों में पूर्ण ज्ञान लाभ करने पर ही भौतिक विज्ञान के सब संशय दूर हो सकते हैं ॥

यद्यपि मेरे लिये इस स्वल्पातिस्वल्प समय में भारतीय वैदिक विज्ञान को पूर्णतया सर्वजन के लिये हृदयङ्गम् करा देना केवल कठिन ही नहीं प्रत्युत असंभव है तथापि अवसर

प्राप्त पञ्च भूत विज्ञान के संबन्ध में कुछ आभास दिखाना आवश्यक है किन्तु मेरा विश्वास है कि मेरे इस क्षुद्र वक्तव्य से सर्वात्मना सबके सब संदेह दूर नहीं हो सकते। अत एव अपने संदेहों को दूर करने के लिए वेद शास्त्र का (जो कि पूर्ण विज्ञान का भण्डार है) अवलम्बन करना चाहिये जिससे निःसन्देह सब वैज्ञानिक संदेह दूर हो जायँ।

इस संबन्ध में मेरा किञ्चित् आरम्भिक वक्तव्य यह है कि इस सम्पूर्ण जगत् के अशेष पदार्थों का आदि मूल श्रोत जहाँ से आरम्भ होता है उसको ब्रह्म कहते हैं वह सर्वथा एक है। उससे दो स्रोत आरम्भ हुए हैं—पर और अवर, इन परावर संज्ञक द्विविध श्रोत में से अवर श्रोत का ब्रह्म ही पञ्चभूत कहा जाता है। वह दो वर्गों में विभक्त है। जैसा कि श्रुति कहती है—

द्वे वाव ब्रह्मणोरुपे—मूर्तं चामूर्तं च, मर्त्यं चामृतं च
स्थितं च यच्च सच्च त्यश्च। इत्यादि। (शत० १४।४।२)।

अर्थात्—आकाश वायु—ये दोनों एक वर्ग के भूत हैं। ये अमूर्त हैं, अमृत हैं, यत् हैं, और त्य हैं। इनके अतिरिक्त तेजोबन्न ये तीनों द्वितीय वर्ग के भूत हैं। जो कि मूर्त्त हैं, मर्त्य हैं, स्थित हैं, और सत् हैं। इन दोनों में सत् का रस यह सूर्य्य का बिम्बमण्डल है। इनही तीनों से यह मण्डल बना है और सूर्य्यमण्डल से ही निकल कर ये तीनों जगत् में परिव्याप्त हैं। इसी प्रकार दूसरे दोनों त्य नाम के भूतों का अर्थात् आकाश और वायु का रस इस सूर्य्य-मण्डल में अन्तः प्रविष्ट हिरण्मय पुरुष है। उसी से निकलकर ये दोनों सम्पूर्ण जगत् में परिव्याप्त हैं। सत् और त्य ये दोनों मिलकर पञ्चभूतमय एक सत्य-प्रजापति का रूपसिद्ध होता है जोकि अनादि काल से अवर-ब्रह्म का एक स्वरूप बना हुआ नित्य स्थित है जिसके लिये यह कहा गया है कि—

प्रजापतिर्वा इदं सर्वम् प्रजापतिरेवेदं सर्वमसृजत-इति।
यस्मादन्यो न परो अस्ति जातो य आवभूव भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संरराण स्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी॥ इत्यादि।

तात्पर्य्य यह है कि इस प्रजापति के शरीर कहे जाने वाले जितने भूत परमाणु हैं उनके ही विश्लेषण संश्लेषण से विश्व के अनन्त भौतिक पदार्थ बनते रहते हैं। संश्लेषण से अन्य प्रकार के, विश्लेषण से और अन्य प्रकार के भौतिक स्वरूप बन जाते हैं। केवल संयोग वियोग के तारतम्य से ही भौतिक पदार्थों के उत्पत्ति विनाश होते रहते हैं। किन्तु जिनके संश्लेषण विश्लेषण के कारण ही इन भौतिक पदार्थों का उत्पत्ति विनाश क्रम समझ में आता

है उन पांच मौलिक भूत पदार्थों का कभी नाश नहीं होता है। अतएव तेज—अप्—अन्न इन तीनों भूतों को 'सत्' और आकाश-वायु इन दोनों को 'त्य' नाम देकर इन पाँचों मौलिक तत्त्व समष्टि को एक ही शब्द से "सत्त्य" कहते हैं। क्योंकि आकाश, वायु और तेज, अप्, अन्न इन पाँचों मौलिक भूतों के संयोग वियोग से उत्पन्न विनष्ट होने वाले यौगिक भूतों के वैकारिक होने पर भी प्रजापति शरीरारम्भक मौलिक पञ्चभूतों की सत्यता कदापि नष्ट नहीं होती है।

अब विचार यह है कि जिन आकाश वायु वा तेज आप् अन्न के संबन्ध में यह सत्यता कही जाती है उनही पांचों के सम्बन्ध में नवीन साइंस की परीक्षा द्वारा अन्यता और यौगिकता कही जाचुकी है। फिर इनकी सत्यता कैसे मानी जा सकती है।

उत्तर यह है कि पूर्व में कहा गया है कि ब्रह्म एक नित्य तत्त्व है वह अजन्मा पुरुष है किन्तु उस में पांच प्रकार की प्रतिष्ठा नित्य रहती है। पञ्च प्रकृति विशिष्ट एक पुरुष ही ब्रह्म नाम का एक आदि श्रोत प्रवर्तक नित्य पदार्थ है। वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि—

"प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्धयनादीऊभावपि"

पुरुष ज्ञान मय एक है किंतु उसमें क्रिया मय प्रकृति पञ्चपर्वा है। उन प्रकृतियों के कारण से ही एक ब्रह्म से भिन्नभिन्न प्रकार की नाना विध अनेक सृष्टियां होती रहती हैं। जैसा कि कहा गया है—

"अजोपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपिसन्।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य संभवाम्यात्म मायया" ॥ इति ॥

इनमें प्राण[१]-आप्[२]-वाक्[३]-अन्न[४]-अन्नाद[५] ये पंच ब्रह्म प्रकृतियाँ हैं। इनही पांचों के अवर स्रोत रूप में क्रम से पांच भूत कहे जाते हैं। विश्वव्यापी (युनिवर्सल Universal) प्राण को आकाश, और आकाश व्यापी आप् को वायु कहते हैं। ये दोनों एक वर्ग के भूत हैं और नित्य अविनाभूत हैं जैसा कहा गया है कि—

"यथाऽऽकाश स्थितो नित्यं वायुः सर्वगो महान्" ॥ इति ॥

इस आप को अथर्व वेद में वायु कहा है। इसी प्रकार वाक् ही तेज, और अन्न अन्नाद से आप अन्न का ग्रहण होता है। ये पांचों भूत तत्व हैं। नित्य अयौगिक पदार्थ हैं।

प्राणघन स्वयं भूमण्डल को परमाकाश, आपोमय परमेष्ठिमण्डल को वायु समुद्र, वाङ्मय सूर्य मण्डल को तेजःसंस्थान और अन्न अन्नाद् मय पृथ्वी चन्द्र को अग्नि आपः संस्थान प्रत्यक्ष देखते हैं। इनही पांचों भौतिक संस्थानों के आरम्भक प्रकृतियों को विश्वसृट् कहते हैं। इन पांचो के पञ्ची करण होने पर येही पांच इनही नामो से पञ्चजन कहे जाते हैं। येही परमाणु वा त्रसरेणु की अवस्था में आकर पांच प्रकार के महाभूतों को उत्पन्न करते हैं जिनके यौगिक संबन्ध में सत्वभूत नामके भौतिक पदार्थ उत्पन्न होते हैं। जैसे पाषाण लोष्ट आदि। काष्ठ, पुष्प, फल आदि। अस्थि, मास, स्नायु, त्वक् आदि। तात्पर्य यह है कि इन ही भौतिक पञ्च भूत तत्वों से उत्तरोत्तर सृष्टि क्रम के द्वारा पांच अवस्था के पांच भूत प्रसिद्ध होते हैं। १-गुणभूत, २-अणुभूत, ३-त्रसरेणुभूत, ४-महाभूत, और ५-सत्वभूत। इन पांचों अवस्थाओं में महाभूतों के ऊपर यौगिक होने का, वा तत्व न होने का आक्षेप किया गया है जो बिलकुल असंगत है क्योंकि द्व्यणुक अणुक रूप से त्रसरेणु की पञ्चीकरण रूप से महाभूतों की यौगिकता को स्वीकार करने वाले भारतीय शास्त्रों पर इस प्रकार का आक्षेप करना दुःसाहस है और अनभिज्ञता है। आक्सोजन 'Oxygen' और हाइड्रोजन (Hydrogen) परमाणुओं के परस्पर संयोग से सिद्ध किये हुये जल वा वायु द्व्यणुक नाम के यौगिक भूत हैं किन्तु जिन परमाणुओं के योग से ये द्व्यणुक त्र्यणुक भूत उत्पन्न हुए हैं वे सब परमाणु ही नही हैं। तब भौतिक परमाणु पर यौगिकता का आक्षेप करना कैसे उचित हो सकता है। कदाचित् किसी को यह भ्रम होवे कि आक्सीजन (Oxygen) और हाइड्रोजन (Hydrogen) परमाणुओं के मिलने पर ही जलभूत उत्पन्न होता है उससे पूर्व परमाणु, अवस्था में जलभूत कहकर कोइ तत्व ही उपलब्ध नहीं है तो उनसे निवेदन है कि जिस हाइड्रोजन (Hydrogen) परमाणु का आक्सीजन (Oxygen) संयोग द्वारा आप् जल की उत्पत्तिमान रक्खी है वही हाइड्रोजन परमाणु वास्तव में तत्व रूपी जल परमाणु है आक्सीजन (Oxygen) परमाणु आग्नेय परमाणु है जिसका पानी में रहना वा जल के द्रवत्व को साधन करना भारतीय शास्त्रों में बारंबार निर्दिष्ट है। वास्तव में हाइड्रोजय (Hydrogen) ही जल परमाणु है नाइट्रोजन (Nitrogen) ही वायु परमाणु है जिसमें आक्सीजन (Oxygen) नाम का अग्नितत्व प्रविष्ट होकर उनदोनों में स्थूल रूपता समर्पण करता है। इसलिये सिद्धान्त यह हुआ कि सत्वभूत, महाभूत और त्रसरेणु भूत-इन तीनों में ही साइंस के द्वारा यौगिकत्व का आक्षेप किया गया है वह मिथ्या आक्षेप है। क्योंकि इन तीनो अवस्थाओं में यौगिकता मानने में किसी को विप्रतिपत्ति नहीं हैं। किन्तु परमाणु भूत वा शब्द तन्मात्रा, स्पर्श तन्मात्रा, रुप तन्मात्रा, रसतन्मात्रा, और गन्धतन्मात्रा नाम के गुणभूत और प्राण आप आदि पञ्च प्रकृतिभूत इन तीनों अवस्थाओं में पञ्चभूतों में यौगिकता का कुछ भी सम्बन्ध नही है। अत एव ये मौलिक पंचभूत अवश्यमेव तत्व हैं।

इनही पांचों तत्व के संयोग वियोग से विश्व के अनन्त भौतिक सृष्टियां हुइ हैं होती रहती है और होती रहेंगी।

यहां कितने ही महाशय शब्द स्पर्श आदि गुणभूतों में गुणत्व है वा द्रवत्व है ऐसा प्रश्न रखते हैं। उत्तर में कहा जा सकता है कि जिस प्रकार घटादि पदार्थ उत्पत्ति क्षण में निर्गुण है पश्चात् उसमें गुण उत्पन्न होता है उसी प्रकार निर्गुण इन गुणों को कदाचित् द्रव्य भी मान सकते हैं।

पञ्च-भूत लक्षण।

१—आकाश।

प्रश्न है कि—

भूत का लक्षण क्या है जो पाँचों भूतों में अनुगत हो?

उत्तर है कि—

भारतीय शास्त्रानुसार पाँचों भूतों में अनुगत निर्दोष लक्षण यह है—

"बहिरिन्द्रिय ग्राह्यगुणकृतात्मत्वं भूतत्वम्"

अर्थात् बाह्येन्द्रियों द्वारा ग्रहण होने योग्य गुणों से जिनका स्वरूप बना हो, जिनका बाह्येन्द्रियों से हम ग्रहण कर सकें वे सब भूत हैं। शब्द आदि तन्मात्राओं,[१] परमाणुभूतों[२] त्रसरेणुभूतों,[३] महाभूतों[४] अथवा भौतिक सत्वभूतों में सर्वत्र ही हम उन गुणों को पाते हैं जिन का श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, और घ्राण से प्रत्यक्ष किया जाता है। विश्व भर में जिन जिन पदार्थों का हम इन्द्रियों के द्वारा किसीप्रकार का प्रत्यक्ष करते हैं वे सब के सब भूत हैं। शब्द का अनुभव श्रोत्र से होता है। यह शब्द विश्वव्यापी (यूनीवर्सल-Universal) किसी एक पदार्थ में कम्पन होकर उसके बीच तरङ्ग का कर्णशष्कुली पर आघात होता है, उसी आघातरूप शब्द का श्रोत्रस्थ प्रज्ञान के द्वारा हम अनुभव करते हैं जिस पदार्थ का कम्पन होनेपर शब्द का स्वरूप सिद्ध होता है उसी कम्पन तरङ्ग का आधारभूत पदार्थ को हम आकाश

कहते हैं। यह कम्पन प्रत्यक्ष सिद्ध है। मेघ से विद्युत् प्रकाश और शब्द दोनों अघात जन्य होने के कारण साथ ही उत्पन्न होते हैं किन्तु प्रकाशापेक्षया शब्द विलम्ब से सुना जाता है। किसी सरोवर के पर पार में किया हुआ वस्त्रादि समाघात को जिस क्षण में हम दृष्टि गोचर करते हैं उससे कुछ बिलम्बक्षण में उस आघातज शब्द को सुनते हैं इससे शब्दगति तरङ्गायित रूप से चतुर्दिक्ष होना सिद्ध है। यद्यपि वैदिक विज्ञान का सिद्धान्त है कि शब्द में प्रातिस्विक गति नही है वायु के द्वारा ही गति शब्द में उत्पन्न होती है। कुछ हो, परन्तु वायु और शब्द दोनों भिन्न पदार्थ हैं इसीलिये तो वायु इस शब्द में प्रतिगति देता है। इन दोनों में यह वायु—" **यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगोमहान्** "—के अनुसार किसी अवकाश में व्याप्त है और सर्वदा गतिमान् है, उसकी गति सर्वत्र नियम से तरङ्गायित रूप में नहीं होती। किन्तु शब्द की गति सर्वदा तरङ्गायित रूप में ही देखी जाती है, तो ऐसी गति वायु में नहीं हो सकती, अवश्य ही किसी स्थिर पदार्थ में हो सकती है, वही हमारा आकाश तत्वहै। सूक्ष्म अनुसंधान करने से" **गतिमत्स्थितिम्** " ऐसे दो पदार्थ परस्पर नित्यानुषक्त सिद्ध होते हैं जिनका संयुक्त एक नाम वैदिक विज्ञान भाषा में "यजुः" है। यत् = गतिशील वायु = औरजूः = स्थिति शील = आकाश। यत्—जूः = यजुः कहा जाता है। इन दोनों का ऐक भाव्य के कारण—' **अनेजदेकं मनसो जवायः** "—इत्यादि रूप से वैदिक विज्ञान उसका विस्तृत व्याख्यान है। उसी वायु संपरिष्वक्त आकाश तत्व को हम आकाश कहते हैं और उसी आकाश से पञ्चभूतों में वाय्वादि पदार्थों की सृष्टि होती है। जैसाकि कहा जाता है— "**आकाशाद् वायुः**"— इत्यादि। स्मरण रहे कि जो वायु इस आकाश के साथ संपरिष्वक्त रूप से रहता है उसकी अपेक्षा यह उत्पन्न वायु भिन्न है। जिनको इस विषय के जानने की विशेष उत्कंठा हो उनको वैदिक विज्ञान का पूर्ण ज्ञान वेद ग्रन्थों से करना चाहिये॥

॥ इति ॥



॥ श्रीः ॥

* पञ्चभूत समीक्षा *

भारतीय-वैज्ञानिकानां पाश्चात्यवैज्ञानिकानांचान्योन्यं वादप्रतिवादौ ।

१—इह तावद् वैदेशिका वैज्ञानिका विद्वांसो जगदुपादान भूतानि तत्वान्यनु संदधानाः पञ्चषष्ठि (६५) मितानि द्वानवति (६२) विधानि वा तत्वान्याचक्षते—

१—आक्सिजन (oxygen) = (अग्निः — वाय्ववस्थः)

२—हाइड्रोजन (Hydrogen) = (आपः — वाय्ववस्थाः)

३—नाइट्रोजन (itrogen) = (वायुः — वायुविशेषावस्थः)

४—कार्बन (Carbon) = (पृथ्वी — वायुविशेषावस्था)

५—क्लोरीन (Chlorin)

॥ इति पञ्चवाष्परूपाणि ॥

१—ब्रोमीन (Bromine) — इत्येकं तरलरूपम् ।

१—आयोडीन (Iodin)
२—फ्लूरीन (fluorine)
३—सलफ़र (Sulpher)
४—सिलिनियम (   )
५—सिलिकण (Silicon)
६—बोरन् (Boron)
७—फास्फरस (Phosphorus)
८—टेल्यूरियम (Tellurium)
९—आर्सेनिक (Arsenic)

॥ इति नवैतानि घनरूपाणि ॥

तदित्थं पञ्चदशैते पदार्था अधातवः । असंयुक्तदशायां शुद्धेन स्वरूपेणादृश्यत्वात् ॥ अथान्ये — पोटाश (Potash) प्रभृतयः पञ्चाशत पदार्था धातवः । असंयुक्तदशायां विशुद्धेन स्वरूपेण दृश्यत्वात् । तथा चैतानि पञ्चषष्ठिविधान्येव सर्वजगदुपादान भूतानि तत्वानि— इति विजानीयात् ॥

—०—

(भारतीयान् प्रति पाश्चात्यानामाक्षेपः)

२—अथ भारतीया विद्वांसः पृथ्वी, जलं, तेजो,वायु,राकाशमिति पञ्चतत्वान्याहुः। यूनान-देशीयास्तु यवनाः पृथ्वी, जल, तेजो, वायु, रूपाणि चत्वारि तत्वानि मन्यन्ते । वस्तुतस्तुनैतानि तत्वानि इति ब्रूमः । साइन्स विद्यायां तेषां यौगिकतया प्रत्यक्षीकरणात् । तथाहि पृथ्वी तावत् स्वर्ण रजत लौह हीरक पारद गन्धकादीनां सप्तति तत्वानां समष्टि मात्रं विज्ञायते । एवमाक्-सिजन हाइड्रोजनयोर्नियतमात्राया संश्लिष्टयोः समवायोजलम् आक्सिजन, नैट्रोजनयोर्नियत-मात्रयोः संश्लेष सिद्धो वायुः । अग्निशब्देन यदि तापो विवक्ष्यते तर्हि स पदार्थानामवस्था विशेषःस्यात् । नत्वेष कश्चन पदार्थः सम्भवति । अथार्चिश्चेदग्निर्विवक्ष्यते तर्हि स भूवायुस्था-क्सिजनस्याङ्गाराख्येन कार्बण तत्वेन संयोगाद् यौगिकोऽर्थः स्यात् । अथेदमाकाशमपि नत्वेव किंचिद् वस्तु संभवति । पृथिव्यादि पदार्थानामवस्थानायावकाश मात्रस्य तस्य शून्य रूपत्वेना-पदार्थत्वात् ॥

यत्त्विदमाकाशमुपरिष्टान्नीलवर्णं दृश्यते इत्याहुः—तदपि भ्रान्ति मात्रम् । अति घनीभूतस्य वहुविस्तृतस्य वायुसङ्घस्यैवेत्थं नीलिम्ना प्रत्यक्ष भूतत्वात् । अथ वायोरूपं नास्तीति वैशेषिक-नैयायिकादयोऽभिमन्यन्ते । तदप्येते नैव नीलिम्नः साक्षात्कारेण प्रत्याख्यातं वेदितव्यम् । तथा च नैतानि पञ्चभूतानि तत्वानीति सिद्धम ॥ इति ॥

(भारतीयकृतमाक्षेप समाधानम्)

३—अत्रोच्यते । यदित्थं केचन वैज्ञानिकः सनातनं भारतीय विज्ञानं प्रत्याक्षिपन्ति तत् तेषां बालचापल्य मात्रम् ।एकान्ततस्तेषां भारतीय विज्ञानभिज्ञत्वात् । तथाचाभरणक्रमाहुः—

न स्थाणोरपराधोऽयं यदन्धो नैन मीक्षते ।
चक्षुर्दोषादुलूकोऽयं सूर्य्यज्योतिर्न पश्यति ॥ १ ॥

१—पञ्चभूतानि ।

१—गुणाः, २ अणवः, ३—रेणवः, ४—स्कन्धाः, ५—सत्वानि । इत्येवं पञ्चविधानीह भारतीयानां नये भूतानि ॥ १—तत्र शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धाख्यानि तन्मात्रा संज्ञानि गुणभूतानि ॥ २—आकाश, वायु, तेजो, जल, पृथिव्याख्यानि अणुभूतानि । एतन्नामान्येव च पञ्चीकृतरूपाणि यौगिकानि महाभूतानि ॥ तानि त्रिविधानि अणुरूपाणि, स्थूलरूपाणि, सत्वरूपाणि चेति । तत्र यौगिकानामेषामणूनि रेणवः । तेषामेव स्थलानि स्कन्धाः । शरीरेन्द्रिय विषयारब्ध रूपाणि सत्वानि तेषु गुणभूतान्यणुभूतानि चैक द्रव्यत्वादिह तत्वानि विवद्यन्ते, नत्वपराणि महाभूतानि । तेषां पञ्चीकृत रूपतया बहुद्रव्यत्वाद् भारतीयैरेव यौगिकत्वे नाभ्युपेतत्वात् । अणुभूतानि तु पञ्चीकरणोपादानभूतान्यसंयुक्तरूपतया तत्वानि । तान्यजानद्भिर्यौगिकानि महाभूतान्युदाहृत्यायमाक्षेपः क्रियते । तदश्रद्धेयमिति विरम्यते ॥

२—वायुः ।

अथ वायो रूपि द्रव्यत्व वायुसंघस्य च नीलवर्णत्वमित्यपि केषांचित् प्रलाप मात्रम् । नीरूपे रूपकल्पनाया अवैज्ञानिकत्वात् । सौरज्योतिर्मण्डलात् तु वहिर्धा चतुर्दिक्षु कश्चिद् वायु समुद्रः पर्य्याप्नोति । स चाज्योतिष्मत्वान्निविडान्धकारः संभाव्यते । सोऽय घोरान्धकारः सौर हिरण्मय ज्योतिः पटलाभ्यन्तरतो दृश्यमानो रासायनिक संयोग विशेष माहात्म्यान्नीलभूतोऽवलोक्यते । यथा सूर्य्यस्यायमेकैको रश्मिः कृष्ण, धूमल, शोण, हैम, पीत हरित, नील, भेदात् सप्तनाडीमयो दृश्यते । तत्राऽयं नीलो वर्णः सांयौगिको विकारो यया प्रक्रिययाऽभिनिष्पद्यते । तयैवायमिहापि कृष्णो वर्णविशेषो नीलिमा सम्भवति । तदेतदेवेदं नीलमाकाशं परिपश्याम इति मन्यामहे ।

यद्यप्यन्ये केचिद् विद्वांसो घनीकृते वायौ हरित रूपोपलब्धि वशाद् वायुरयं हरित रूपोऽस्तीति कल्पयन्ति । तदप्ययुक्तम् । वाष्पावस्थस्यैव वायुत्वेन प्रतिपन्नतया घनतायां वायुत्वस्य निरस्तत्वात् । यत्तु भवति जलं वाष्पावस्थं, तरलावस्थं, घनावस्थं, चेति नैतावता जलस्य जलत्वं व्याहन्यते । आक्सिजनैक परमाणु समवेत हाइड्रोजन परमाणुद्वय संघात रूपस्य जलत्वस्यावस्थात्रयेऽप्यक्षतत्वात् । एवमयं घनावस्थाऽपि वायुत्वान्नापैतीत्यभि मन्यन्ते । तदप्यसत् । अग्नि संयोगाद् वाष्पावस्थस्य सोम संयोगात्तु घनावस्थस्यैकत्व प्रतिपत्तिरवैज्ञानिकत्वात् । विशेषण भेदेन विशिष्ट भेदस्य प्रतिपन्नत्वात् । जलघनता सिद्धस्य तुषारस्य जलविलक्षण कतिपय धर्म्मैरुपेततया तत्र जलत्वाभिमानस्यानवक्लृप्तत्वाच्च । तथा च वायुघनतायां रूपोपलब्धावपि स्वरूपेणायं वायुर्नीरूपएवेति सिद्धम् ॥

३—अग्निः ।

अथ यदस्य तापस्य पदार्थावस्था मात्रत्वं प्रतिपद्याग्नेरपदार्थत्वं मन्यन्ते तदप्यसारम् । बलविशेष संबंधं विनाऽवस्थात्व कलपनायाः प्रलाप मात्रत्वात् । अवस्थाया बलसंबन्ध निबन्धत्वे तु बलजनितस्य तापस्यावस्थात्व सम्भवेऽपि तापगुणस्याग्नि पदार्थस्यावस्थात्व कल्पनाया अयोग्यत्वात् । ननु तापगुणकोऽयं लौह चर्म्मादिर्लौहचर्म्मादि पदार्थ एवस्यान्नत्वदृष्टोऽयमग्निरिति चेन्न । लौहचर्म्मादिषु शीतलतायाः शीतगुणक जलसंबन्धवत् । तेषूष्णताया उष्णगुणकाग्नि संबन्धेनैवाभ्युपगन्तुमौचित्यात् । नचेयं शीतलताप्यर्थानामेवावस्था विशेषः स्यादिति भ्रमितव्यम् । तथा सति जलस्यापि शीतलतायाः कदाचित्कत्व प्रसक्त्या बलजनितोष्णतापाये बलविशेष संबंधंविना नैसर्गिक शीतलताया अनुत्पत्यापत्तेः । दृश्यते च प्रत्यक्षं निसर्ग शीतस्यास्य जलस्याग्नि प्रतपनेनाग्नि प्रवेशादुष्णत्वम् । एवं लौह चर्म्मादिष्वप्यग्निकिरण प्रवेशादेवेयमुष्णता प्रतिभातीत्यवसेयम् । यत्तु शीतगुणस्य जलस्येव नोष्णगुणस्याग्नेः सार्वकालिक प्रत्ययो भवति । अनुष्णयोरेव हस्ततलयोः संघर्षणात् क्षणिक तापोपलम्भेऽपि प्राक् पश्चाद्वा तदनुपलम्भात् । तस्मान्नाग्निः पदार्थः । प्रत्यर्थमुष्णताया बलविशेषात् संबन्धमात्रापेक्षितत्रादित्याहुः । तन्तुच्छम् । संघर्षणोत्पन्न तापगुणोपलक्षितस्य सर्वत्रानुस्यूतस्य कस्यचिन्नीरूपपदार्थस्याग्नित्वेन प्रतिपन्नत्वात् । एतमेवार्थं पुरायुगे यूरोपदेशीया "फ्लाजिष्टन" (   ) शब्देनाचक्षतेस्म । यत्त्विदानीन्तना यूरोपीया विद्वांसस्तमेतं "फ्लाजिष्टन" नामानमर्थं प्रत्याचक्षते तदप्यदूरदर्शिता मात्रम् । सर्व पदार्थानुस्यूतस्यैतस्य मूल पदार्थस्य ब्रह्मविज्ञान शास्त्रे सप्रमाणं वैशद्येन निरूपितत्वात्, इहाप्ययं तापधर्म्माग्निपदार्थो विस्तरतः पश्चान्निरूपयिष्यते ॥ (वस्तुसमीक्षायाम्) ॥

४—आकाशः ।

तत्र तावदयमाकाशो नैकान्ततः शुन्यता मात्रम् । अनुपाख्य रूपायाः शून्यताया वैज्ञानिकनयेऽनुभ्युपेयत्वात् । यस्तावदयं शून्यरूपोऽवकाशः प्रतिपद्यते सोऽयमत्यणिष्ठः कश्चन विभुः पदार्थविशेषोऽभ्युपगम्यते । यं तावद् भारतीय वैज्ञानिकाः श्वानं नामेन्द्रमाचक्षते, पश्चात्याश्चैनं ईथर (Aether) नाम्नाऽभ्युपगच्छन्ति । तस्यैव तु कम्पन विशेष सिद्धाः शब्दादयः कतिपये भावाः प्रत्यक्षी क्रियन्ते । तमेतमेवानन्त मव्यावृत्तं विश्वव्यापकमर्थं भारतीया महाकाशमाचक्षते । स इन्द्रोनामायमात्मा सर्वेषां भूतजातानाम् ।

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः-
वायोरग्निः, अग्नेरापः, अद्भ्यः, पृथिवीति, विद्यात् ॥

तान्येतानि योगरूढान्येव पञ्चभूतानि तत्राय भूताकाशो महाकाशादुत्पन्नः प्रकृतैक ब्रह्माण्ड मात्र व्यापी वागर्थः। तथा च श्रूयते वेदे—"अयोवागेवद् सर्वम्" ॥ इति ॥

अस्यैव तु वाचः समुद्रस्य वीची तरङ्गाः कर्णशष्कुल्यां प्रतिहिताः सन्तः "श्रोत्रग्रह्याः शब्दाः" इत्यभ्युपपद्यन्ते। तादृश शब्दगुणकोऽयमाकाशः शिद्धत्येव खलु तात्विकः पदार्थः इति न शक्यते स्थूल दृष्टिभिः अदृष्टत्वेप्येकान्ततः प्रत्याख्यातुम।

अथापो विविच्यन्ते। "अपो द्रवाः स्निग्धाः" इति वैशेषिकं सूत्रम् ता एता आपश्चतुर्धा भवन्ति। श्रूयते हि—

"आत्मावा इदमेक एवाग्र आसीत्। सइमान् लोकानसृजत – अम्भो मरीचीर्मर आपः अदोऽम्भः परेण दिवं द्यौःप्रतिष्ठा अन्तरिक्षं मरीचयः पृथिवीमरः। या अधस्तात् ता आपः। सोऽद्भ्यः पुरुषं समुद्धृत्या मूर्छयद्। इति ॥ (ऐ० १।१।१)॥

तत्रेदमम्भः सूर्य्यादुपरि वायुलोकस्थं। वायुभूतम्। तदेवेदं पश्चात्यानां हाईड्रोजन शब्देनाख्यातं सभाव्यते हाइड्रोजनस्य जल प्रजनन तत्वरूपत्व देव हेतोः आग्नेय सोमेन आक्सिजन संज्ञेन संयोगाज्जलभूतं प्रजायते। "कंस्विद् गर्भं प्रथमं दध्र आप" इति श्रुतौ अग्निं गर्भं दध्र इति सिद्धान्तात्। गुणाणुरेणुस्थूलत्वत्वेति पञ्चधा विभक्तेषु भूतेषु प्रथमद्वयातिरिक्तानां त्रसरेणु प्रभृतीनां यौगिकानां भूतानां मग्निषोमीयत्व सिद्धान्त दग्निसोम संयोगादेवोत्पत्तेः सिद्धत्वाच्च।

तत्र चैषः द्विविधः सोमो भवति दकसोमो भास्वरसोमश्च तत्रायं दकसोमः सर्वाकाश परिव्यापी विशुद्धरूपोऽग्निः दाह्योऽर्थः। स मुख्यः सोमः स एवायं दिकसोमो विज्ञाय यमेते पाश्चात्या आक्सिजन शब्देनाचक्षते। तमिह भारतीया विद्वांसः पवमान शब्देनाहुः ॥ पवमानो नामायं सोमोनून मग्निना घोरेण सम्पन्नतमो घोराग्नि शब्देनाप्याख्यायते। ऋग्वेदीय नवमण्डले सोमत्वेन प्रतिपन्नस्य अग्न्याधेय प्रकरणे घोराग्नित्वेनाख्यातत्व त् तदग्नि संयोगदेवैता आपो द्रवा दृश्यन्ते "अपां संघातो विलयनं च तेजः संयोगादिति" वैशेषिक सूत्रेऽपां द्रवणस्याग्नि मूलक तयैव सिद्धान्ति तत्वात्।

अप्सुप्रविष्टोऽयमग्निर्द्रवत्व समर्पक भावेन परिणमते तस्मादेष द्रवभूतोऽर्थोऽग्निसोम संयोगकृत रूपतया यौगिक एवेष्यते न तत्वम्। यत्रत्वदृश्ये कस्मिंश्चिदणु भूतेऽर्थयमग्निः संयुज्यमानो द्रवरूपेण परिणमते ता एता आपोऽणुभूतास्त्वं तदम्भो नाम ॥ अम्भश्चेदं रसवदर्थः स रसोगुणः। तेन च गुणेन रसेनायो ऽर्थोगुणीसोणुः ता आपः।

"आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः"

इति श्रुतौ अपामणूनां रसगुणकत्वे नाम्नानात् गुणिनमन्तरा चायं गुणः पृथक्त्वेन कथं चिदपि नोपपद्यते । तस्माद् गुणविशिष्टोऽणुः पदार्थस्त्वम् ॥ अथैषां पश्चात्यानां निकायेऽयमाक्सजन पदार्थोऽणुः हाईड्रोजन पदार्थश्चाणुः । यस्तु पुनरयमाक्सीजन विशिष्टो हाईड्रोजन नामार्थः स नाणुः किन्तु त्रसरेणुर्नाम यौगिकोऽर्थः प्रकल्पते त्रसरेणुनां च संघातः स्थूल भूताख्यो भवति। स च सुतरां यौगिकोऽर्थः स्यात् । तस्मात्तस्य स्थूल जलस्य यौगिकत्वेन भारतीयैरेवाभ्युपेतत्वाद् वास्तविकेषु भारतीय वैज्ञानिक तत्वेष्वयमाक्षेपा न तरां वैज्ञानिक समाजे शोभते इति विद्वद्भिर्निष्पक्षपात बुद्धया पर्य्यालोच्यम् ॥

अपिचेदमत्रान्यद् ब्रूमः । योगजदृष्ट बलेनाति सूक्ष्मो परोक्षार्थदर्शिनो हीमे भारतीया महर्षयः सकल वैज्ञानिक जगद्गुरुवः प्रतिपत्तव्याः ।

> आविर्भूत प्रकाशोनामनभिप्लुत चेतसाम् ।
> अतीता नागत ज्ञानं प्रत्यक्षान्न विशिष्यते ॥
> अतीन्द्रियान्न सवेद्यान् पश्यन्त्यार्षेण चक्षुषा ।
> ये भावान वचनं तेषां नानुमानेन बाध्यते ॥

अतएव ये केचन भारतीया अपठित भारतीय विज्ञान शास्त्रा भारतीय वैज्ञानिकत्वेष्वाक्षेपं कुर्वन्ति तेषां भारतीय विद्वत्समाजे स्वीयसंशय कलाप समुच्छेदाय शिष्यत्वमभ्युपगम्य महामहर्षि परीक्षा सिद्धं विज्ञानं वेदग्रन्थेभ्यः सम्यगधिगन्तव्यं न त्वज्ञानात् संशय्यामिथ्यैवेदृशा आक्षेपः कर्तव्य इति सविनय प्रर्थयामहे ॥

५—पृथिवी ।

अद्भ्यः पृथ्वीति श्रूयते आपो वा इदमग्रे सलिलमासीत् । तेन प्रजापतिश्राम्यत् कथमिदंस्यादिति । सोऽपश्यत् पुष्करपर्णं तिष्ठत । सोऽमन्यत् अस्तिवैतत् यस्मिन्निदमधितिष्ठत् आपो वै पुष्करपर्णम् तदप्रथयत् । सा पृथिव्यभवत् ॥ तत्र तावदिमा आपोऽतप्यन्त । यदेताः पर्य्यप्लवन्त तदासां तपः । परिप्लवमानानामपामन्नर्वायुरविशत् स बुद्बुदोऽभवत् । तत्रायं वायुर्वायुविरुद्धास्वप्सु परिगृहीतो निरुद्धः सन् प्रत्यतिष्ठत् । प्रतीष्ठा हीयं त्रयीविद्या ब्रह्मतत्वम् । तथाच क्षुद्र क्षुद्राणां बहूनामेषां बुद्बुदानां प्रतिष्ठाभावेऽपां स्निग्धताया वायोश्च रूक्षतायाः परस्परोपमर्दैन सांकर्य्यादपूर्वं फेनोऽजायत । स पुनः सूर्य्यरश्मिभिरतप्यत । प्रतप्तोस्थिते तस्मिन् सोमो वायुरविशत् । सोऽन्तर्यामसम्बन्धेन प्रत्यतिष्ठत् । सेयं प्रतिष्ठा पूनरन्या त्रयीविद्या ब्रह्मतत्वम् । तत ऊषरा

मृदभवत्। तदिदमस्यामृत्तिकाया स्तात्विकं रूपम्। ता एता मृदः सूर्याग्नितप्ताः सोमवायुयुक्ताः सिकता अभवन्। ताः शर्कराभूत्वा स्वयमातृण्णाः सत्यः क्रमेणाश्मानो भवन्ति। अश्मभ्यः पुनरयः। अयसो हिरण्यम्। तथा च—आपः[१], फेनः[२], ऊषः[६], सिकताः[४], शर्कराः[५], अश्मा[३], अयः[७], हिरण्यम्[८] इत्येतैरष्ट विधै रूपैः संप्रथनादियमद्‌भ्यः प्रथिता पृथिव्यभवत्। एषामेवाष्टानां पृथिवीरूपाणां संघातोऽयमष्टाक्षरगायत्रच्छन्दा अग्निभूतमयो भूपिण्डः। तत्रौषधिवनस्पत्यसृजत। तेनेमां पृथिवीं प्राच्छादयत्। ता वा एता नवसृष्टयः। तस्मादाहुः—त्रिवृदग्निरिति। इयंह्यग्निरिति श्रूयते अभूद्वा इयं प्रतिष्ठा तस्माद् भूमिर्नाम। स एष पृथिवीतत्वस्य सृष्टिक्रमो भवति। तथा चायं पृथिवी पिण्डेऽष्टानामेव पृथिवीधातुविशेषाणां संघातो न तु पञ्चषष्टिविधानां ततोऽप्यधिकानां वा भूततत्वानामिति विज्ञेयम्॥

पञ्चभूतानि।

तानीमानि पञ्चभूतानि। तेषामेषां भूतानामिदं भूतत्व वहिरिन्द्रियग्राह्यगुणकत्वं विज्ञायते। पञ्चभूततत्वेभ्योऽतिरिक्तानां प्राणतत्वनां मानसतत्वानां वा वहिरिन्द्रिय ग्राह्यगुणकत्वादर्शनात्। शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धा—इतीमे भूत गुणा भवन्ति। तेच श्रोत्र त्वक् चक्षुर्जिह्वा घ्राणेभ्यो बहिरिन्द्रियेभ्यः क्रमेण गृह्यन्ते। पञ्चाप्येते भूतगुणाः सूर्य्यरश्मिविशेषसंयोगादेवाजायन्त। तथा चैष सहस्रसंख्याकेषु सूर्य्यरश्मिषु विलक्षणः कश्चित्सूर्य्यरश्मिरप्सु प्रविष्टोऽन्तर्यामसम्बन्धेन परीगृहीतः सूत्रात्मलक्षण वायुना स्तब्धः संदृब्धो भूत्वा प्रतिष्ठामापन्नः सन् गन्धो नाम गुणः प्रजायते। तत्र च पूर्वपूर्वं भूतगुणाः क्रमेणावतीर्णाः संसृष्टाः संहन्यमाना भवन्तीति सर्वतः प्रथमोऽयमेकगुण आकाशो, द्विगुणो वायुः, त्रिगुणं तेजः, चतुर्गुणा आपः, पञ्चगुणा पृथिवी संपद्यते॥ तेषामेषां भूतगुणानामारम्भकाःइमे सूर्य्यरश्मिविशेषा अग्निस्तत्वम्। अथ यावानयमत्र सूत्रात्मा वायुः—यावत्यो वा तत्र संहता आपः—सोऽयं सोमो नामापरं तत्वम्। एषामेवापोऽग्निवायुविशेषाणां सयोगादिद मग्निषोमीयं यद्रूपं प्रजायते तदिदं मैथुनीं सृष्टिं प्रजनयच्छुक्रं नामोत्तरं तत्वं प्रवर्तते—इति विज्ञेयम्॥ तस्मात् सन्त्येवाकाशादीनि योगरूढानि च पञ्चतत्वानिति सिद्धम्॥

तत्वम्।

अयं च तत्वशब्दो भूतानामेषा मात्मान माह।

१—यस्मादन्यो न परो अस्ति जातो य आ बभूव भुवनानी विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया सं रराण स्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी॥

२–प्रजापति श्चरति गर्भे ऽन्तरजायमानो बहुधा विजायते ।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरा तस्मिन् ह तस्थु र्भुवनानि विश्वा ॥

३–प्रजापते न त्व देतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो हअस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥

इत्यादिभिः श्रुतिभि रिदमेकैकं भूतं प्रजापतिरिति विज्ञायते । तस्य द्वे रूपे श्रूयते—अनिरुक्तं च सर्वं चेति । यस्तावदन्तरजायमानो गर्भे तिष्ठन बहुधा विजायते सोऽनिरुक्तः । तदभिप्रायेण श्रूयते "प्रजापतिर्वा इदं सर्वमसृजत" इति । अथ यः सर्वो नामान्यः प्रजापतिः तदभिप्रायेण श्रूयते— "प्रजापतिर्वा इदं सर्वमिति" ॥ तत्र योऽयमेतेषु सर्वेषु भूतेष्वन्तश्चरोनामानिरुक्तः प्रजापति स्तदिदं तत्त्व मत्याख्यायते । स्वजन्यभूवनान्तश्चारित्वमन्तरजायमानत्वं बहुधाविजायमानत्वं च तत्त्वलक्षणं भवति । अस्ति हि पृथिवीतत्वं पार्थिवेषु सर्वेष्वर्थजातेषु अन्तश्चरम् । अनन्तविधानि च पार्थिवानि भौतिकजातानि जनयद् विजायते । किन्तु पूर्णावयवतस्तस्मात् पूर्णावयवा सृष्टिरुत्पद्यते न तु पृथक्कृतदवयवेभ्यः पृथग्धाराः सृष्टयोऽन्तरतः प्रजायन्ते । मैथुनीं सृष्टिं जनयतस्तत्तस्यावयवेष्वन्तर्यामसंबन्धेन संबद्धेषु हृद्ग्रन्थिमत्सु समवायिकारणतया व्यासव्यवृत्त्या वर्तमानत्वात् ॥ एतदेव हि तस्यैकद्रव्यत्वं तत्त्वलक्षणं भाव्यम् । तत्त्वे कान्तत स्तावद्यौगिकत्वं तत्त्वलक्षणं भारतीया मन्यन्ते ।

"अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपिसन् ।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य संभवाम्यात्ममायया" ।
न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
पराऽस्य शक्ति र्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञान बल क्रिया च" ॥

इति श्रुतावादितत्वस्याप्यव्ययस्य विविधशक्तिमत्तया ज्ञानबलवत्तायाश्च श्रूयमाणतया नियौगिकत्वलक्षणैकद्रव्यतायाः प्रत्याख्यातत्वात् ॥ तस्मादिद मनिरुक्तप्रजापतिलक्षणं भौतिकेषु सर्वेषु विशेषणानुस्यूतमन्तस्तत्वं वेदितव्यम् ॥

अथ यः पुनरन्योऽयं सर्वोनाम प्रजापतिः, स त्रिपर्वा विज्ञायते उक्थम्, अर्कः अशितिश्चेति । यदुक्थं स आत्मा । योऽर्कः स प्राणः । या त्वशिति स्तदन्नम् ॥ यत्रायं तत्त्वशब्दस्तमेत मात्मान माह । आत्मलक्षणं चेदं तत्त्वं त्रिविधमिष्यते —अमृतं ब्रह्म शुक्रं चेति । श्रूयतेहि—

ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः।
तदेव शुक्रं, तद्ब्रह्म, तदेवामृतमुच्यते ॥ इति ॥

तत्त्वेभ्यश्चैतेभ्यः सृष्टयः प्रजायन्ते। त्रिविधा हि सृष्टिरुपपद्यते—मानसी, याज्ञिकी, मैथुनी चेति पौराणिका आहुः। भावसृष्टिः, गुणसृष्टिः, विकार सृष्टिश्चेति। स्मर्य्यते हि—

"भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ इति।

तत्रेयं पुरुषतो जायमाना भावसृष्टिर् मानसी। नैषा सृष्टिर्द्वयोः संसृष्टिमपेक्षते। मनसा सङ्कल्प मात्रेण स्वाप्नसृष्टिवत् तत्र कार्य्योदयसम्भवात्। अथ यत्रारम्भकयोर्द्वयोर्मध्या अन्योपमर्द्दन विलयनादपूर्वं किञ्चिद्रूपमुत्पद्यते सा गुणसृष्टि र्याज्ञिकी। यथा भुक्तान्नपरिणामस्तृप्तिर्बलविशेषश्च। यथा वाग्नौ घृताहुत्या तदर्चीरुपोपलब्धिः दारुविशेषा दषु संघर्षणादिक्रियाविशेषान्मसृणताचा चक्रियादिगुणोत्पत्तिः। अथ पुनर्यत्रारम्भकयोर्द्वयोः परस्परोपमर्द्दादुभयोर्विलयनादपूर्वार्थोत्पत्तिः सा विकारसृष्टिर्मैथुनी। यथा शुक्रशोणिताभ्यां पुरुषशरीरोत्पत्तिः। यथा नीलपीताभ्यां हरितरुपोत्पत्तिरिति ॥

इत्थं चैतासु त्रिविधासु सृष्टिषु (१)—भावसृष्टेर्यदुक्थंतदमृतं तत्वम्। तदनिरुक्तप्रजापतिरूपमाख्यातम् ॥ (२)—अथ गुणसृष्टेर्यदुक्थं सेयं पञ्चरूपा प्रकृतिः तद्ब्रह्मतत्वम्। तस्य रूपं श्रूयते—"**एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किञ्चन**" इति ॥ इह ब्रह्मणः सृष्टविधौ नाना किमपि सृष्ट्यारम्भकद्रव्यमन्तरतोनास्ति। आरम्भकद्रव्यस्यनानाद्रव्यत्वाभावाद् एकस्यैव कस्यचिदुपादानस्य विवर्तेन गुणसृष्टिसंभवात (३)—अथविकारसृष्टेर्यदुक्थं सा प्रकृति विकृतिः तच्छुक्रतत्वं विज्ञायते ॥ उक्थान्येवैतानि तत्रतत्रसृष्टौ तत्वानि। तद्भावस्तत्वम्। कार्य्याणां कारणभावाभेदेनैवोपलब्धिरस्तीति ताद्भाव्याप्रतिपत्त्या तत्र तत्त्वशब्दो दार्शनिकैः प्रयुज्यते। वैज्ञानिकानां तु नये तत्रै वोक्थशब्दः प्रवर्तते। तथा च भौतिकसृष्टौ यान्युक्थान्युपपद्यन्ते तानीमानी पञ्च भूतानि तत्वानीति विजानीयात्। मैथुनसृष्ट्या सृष्टतया यौगिकत्वेप्येषां स्वजन्यविकारसृष्टावेकद्रव्यत्वात् तत्त्वशब्द प्रयोगो न व्याहन्यते

वस्तुतस्तु पञ्चानामप्येषां भूततत्वानामात्मजन्यत्वाद् वैकारिकत्वमेव प्रतिपाद्यामहे। "**तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवीति**"—क्रमजन्यत्व सिद्धान्तात्। यत्त्वस्मिन् सृष्टिक्रमे सर्वतः प्राथमिकमजन्यत्वादजं नामामृतं तत्त्वं तदव्ययं नामात्मा।

अजोपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोपि सन् ।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य सम्भवाम्यात्म मायया ॥ इति स्मरणात् ।

तदिदमव्ययं श्वोऽग्नीयसं नाम मनस्तत्त्वं तैत्तरीयक श्रुता वाम्नायते । मनस्त्वाच्चैष बलवद्रसलक्षणः कामात्मा । नित्यमेतस्यानन्दरसस्य भूम्नः कामयमान बलत्वात् ताप्यमान बलत्वाच्छ्राम्यमाण बलत्वाच्च । तथा च श्रूयते—

कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् ।
स तो बन्धुमसति निरबिन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा । इति ॥

अत्र सच्छब्दो रसमाह । असच्छब्दो बलमाह । सर्वतः पूर्वंहीदमासीत् । तस्मादसदिदमप्रत्यक्षं निरुपाख्यं तत्त्वं तमोभूतं श्रूयते—

तम आसीत् तमसा गूढमग्रे अप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् ।
आन द वातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किञ्चनास ॥ इति ॥

तदिदममृतं नाम तत्त्वं तटस्थलक्षणेन कथंचिद् ज्ञानमानमपि स्वरूप लक्षणेन वाङ्मनसागोचरत्वादविज्ञेय मचिन्त्यं चेति विरम्यते ।

अचिन्त्याः खलु ये भावा न तांस्तर्केण योजयेत् ।
प्रकृतिभ्यः परं यच्च तदचिन्त्यस्य लक्षणम् ॥" इति श्रवणात् ॥

अथ यद् द्वितीयं पञ्चप्रकृतिशब्दं ब्रह्मतत्त्वं स प्राणः । असदर्थ प्राणः । असदेवेदमग्र आसीत् ततो वै सदजायत चत्वार आत्मा त्रयः पक्षपुच्छानीति सप्तप्राणः प्रजापतिः । ततो ब्रह्मैव प्रथमभसृज्यत । ब्रह्म वै सर्वस्य प्रथमजं,ब्रह्मैव सर्वस्य प्रतिष्ठा । तस्यां प्रतिष्ठितोऽयं प्रजापतिरपोऽसृज्यत वाच एव लोकात् । तथाहि–उक्थंयजुः सामेतिब्रह्मणोरूपम् तत्रेदंय जुर्यच्चजूश्चेतिकृत्वा स्थितिगति लक्षणं तत्वम् । तत्रापि गतिलक्षणः प्राणः स्थिति लक्षणा वाक् । वाक्तत्वे च प्रविष्टादस्मात् प्राणतत्वादापोऽसृज्यन्त । अथैव प्राणमयः प्रजापतिस्तास्वप्सु त्रयीविद्यया सह प्राविशत् । सोऽयमग्निः सत्यं नामार्थः प्रादुरभवत् । सोऽग्निस्त्रेधा विवर्तते प्राणलक्षणो वेदसंज्ञो ब्रह्माग्निः प्रथमः । वाग्लक्षण आङ्गिरस संज्ञो देवाग्निर्द्वितीयः । अन्नाद लक्षणःपशुसंज्ञो भूताग्निस्तृतीयः इति । तत्र यो यं प्राण लक्षणो ब्रह्माग्निः तदुक्थं यजुः सामिति त्रिभिः शब्दैस्त्रेधा व्याख्यायते बृहदारण्यके । प्राणोहीदं

सर्वं मुत्थापयति, प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते, प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि ईति । (बृ०आ०५।१३॥) स चायं प्राणो भूतेषु संप्रविष्टो घोराग्निलक्षणो द्रष्टव्यः ।

"अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयम् ॥" इति (मं०सं० १।५।१)
अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया ।
आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥ (१।५।१)
अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः ।
शुची रोचत आहुतः ॥ (१।५।३)
अग्निस्तिग्मस्तिग्मतेजाः प्रतिरक्षोदहतु सहनामरातिम्,
अपाघशंसं नुदताम् ॥ मं० सं० (१।५।१) इत्येवं

तस्यैव त्रिलक्षणस्य पवमानरूपेण पावकरूपेण शुचिरूपेण वा भूतेषु श्रूयमाणत्वात ॥ तत्रैतं पवमान नामान मेव घोराग्नि मद्यतनाः केचन विद्वांसः "आक्सिजन"-शब्देनाचक्षते-इति संभाव्यते । भूतस्वरूप समर्पकश्चायं प्राणो नत्वेवैषां भूतानां यौगिकत्वं कल्पयति । भूतानां वाङ्मयत्वाद् वाग्द्वय योगस्य यौगिकत्वसमर्थकत्वेऽपि वाक्प्राणयोगस्य शक्तिशक्तिमद्योगस्यैव यौगिकत्व समर्थकत्वा विवक्षणात ॥ तस्मादेतदाक्सिजन योगादेषां भूतानां यौगिकत्वं नास्ति । तद्योगं विना भूतस्य भूतत्वानुत्पत्तेः । न खलु तत्र भूतद्वययोगः संभवति येनाक्सीजनयोगेनोत्पन्नानां भूतानां यौगिकत्वं संभाव्येत । तस्माद् - आक्सीजन-हाइड्रोजन-योगेन जलभूतस्य, आक्सीजन् नाइट्रोजन योगेन वायुभूतस्य वा यौगिकत्वप्रकल्पना नितान्तं भारतीय विज्ञानानभिज्ञत्वात् केषांचित् प्रलापमात्रमिति विरम्यते ॥

अथ विकारसृष्टेर्यदुक्थं तदिदं तृतीयं शुक्रतत्वं भवति । तत्र द्वयोः संयुज्यमानयोरुभयोप मर्दादपूर्वं किञ्चिद्रूपमुत्पद्यते । यथा गवामुदराग्नौ हुतानां तृणानां परस्परोपमर्दादपूर्वं क्षीरं जायते । श्रूयते हि—

यदग्ने रोहितं रूपं तेजसस्तद्रूपं यच्छुक्लं तदपां यत्कृष्णं तदन्नस्य । अपागादग्नेरग्निन्त्वम् । वाचारम्भणं विकारो नामधेयं त्रीणि रूपाणीत्येव सत्यम् । (छां०६।४)

तेजोबन्नानि हीमानि त्रीणि रूपाणि भूततत्वानि तत्रव्याख्यायन्ते । यस्यत्वग्नेरपागादग्नित्वं सोयमन्यो विकारोऽग्निरिति विद्यात् ॥ एवमस्थि मज्जा वागीति तेजसः, मूत्रं लोहितं प्राण इत्यपाम्, पुरीषं मासं मन इत्यन्नस्य विकारा जायन्ते । तदेतद्विकाराणामुत्पादकानीमान तेजोऽबन्नानि भूतानि त्रीणि तत्त्वानि । शुक्र लक्षणानि हीमानि त्रीण्युक्थानि ।

तानीमानि ब्रह्मजनितानि । तथा च श्रूयते -

स देवसौम्येदमग्र आसीत् एकमेवाद्वीयम् । तत्तेजोऽसृजत, तदपोऽसृजत, ता अन्नमसृजन्त । सेयं देवतेमास्तिस्रो देवता अनेनैव जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य नामरूपे व्याकरोत् । तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकामकरोद्-इत्यादि (छां०उ०६।३)

तथा चैषां ब्रह्म जनितानां कार्य्याणामपि सतां स्वजन्यविकार सापेक्ष मुख्यत्वं नापोद्यते ॥ अत एवैतानि भूतानि तत्वानीति विजानीयात् ।

इदमत्रापरं बोध्यम् । अनेक द्रव्यत्वं द्विविधम् । संयुक्तयोरन्तर्यामलक्षणात् समवाय संबन्धादपृथक् प्रत्ययम । बहिर्यामलक्षणादुपयामलक्षणाद्वा संयोगसम्बन्धात्प्रतीतविभागं वा । तत्र पूर्वस्मिन्ननेकद्रव्यत्वेऽप्येकद्रव्यत्वाभिमानः प्रवर्तते । यथैतासामपां तरलभावस्य तदन्तः प्रविष्टाग्निनिवन्धनत्वेऽप्यपामग्नेश्च पृथक्त्वेन प्रत्ययो नास्ति । यत्त्वपां स्वाभाविकं तरलत्वं केचिदाचक्षते तद्वैशेषिकशास्त्रविरुद्धम् **'अपां सघातोविलयनं च तेजः संयोगाद्'** इति वैशेषिकसूत्रेण विलयनस्याग्नि सम्बन्धनिवन्धनत्वोपदेशात् । श्रूयते च - **कंस्विद् गर्भं[1] प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समगच्छन्त सर्वे"** इत्युपक्रम्यतमिद्गर्भं प्रथमं दध्र आपः-इति सत्य लक्षणाग्निगर्भितत्वं वेदविज्ञाने मैत्रिश्रुत्यादिषु दर्शितम् ॥ तथा चासामपामग्निगर्भितत्वेऽप्येकद्रव्यत्वाभिमानः प्रवर्तते । एवं च यावता रासायनिक सम्बन्ध विशेषादेकद्रव्यत्वाभिमानः संपद्यते । तावदयमापःशब्देनोपलक्षितेषु तेषु भूतेषु तत्त्वशब्दव्यवहारो न निवर्तते । तज्जन्यविकारोत्पत्तौ समवायिकारणताया व्यासज्यवृत्त्या वर्तमानत्वात् कारणधर्म्माणां साम्येन कार्य्यस्वरूपारम्भकतया कार्य्यद्रव्ये कारणद्रव्य-ताद्धाव्यलक्षण तत्त्वताया अनिवारितत्वात् । तस्मादनेकद्रव्यत्व संप्रतिपत्तावपि सम्भवन्त्येवैतानि भूतानि तत्त्वानि ।

अपिच भारतीयविज्ञानसिद्धान्ते पञ्चधा विभक्तानीमानि भूतानि विज्ञायन्ते । [1]गुणभूतलक्षणानि, [2]परमाणुभूतलक्षणानि, [3]त्रसरेणुभूतलक्षणानि, [4]महाभूतलक्षणानि, [5]सत्वभूतलक्षणानि चेति । तत्र शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध लक्षणानां तन्मात्राशब्दानां गुणविशेषाणां तथैव च परमाणुभूतानां द्रव्य विशेषणामिह तत्त्वशब्देन व्यपदेश इष्यते न तु त्रसरेणु प्रभृतीनाम् । रासायनिकप्रक्रिया व्यतिरेकेणापि तेष्वारम्भक द्रव्याणां विशकलनस्यो पपद्यमानत्वात् । अथ गुणभूतानां परमाणुभूतानां पुनर्विशकलनं रसायनिकप्रक्रिया मन्तरेण नोत्पद्यते । तस्मादेषामुभयेषां पञ्चभूतानां ब्रह्मजन्यत्वेऽपि तत्वशब्देन व्यपदेशो नोच्छिद्यते--इति विज्ञेयम ॥ आत-श्चैषां पाश्चात्य विद्वत्परिकल्पित परिभाषया आक्सिजनसंयोगसिद्धत्वेपि शुक्रसंज्ञकतृतियोक्थत्वमस्तीति भारतीयविज्ञानसिद्धान्ते तत्वशब्देन व्यवहारोऽनुवर्तते ॥

अथ यद्येवं नित्यसंयोगसिद्धानामसत्प्राणमयब्रह्मजनितानां पञ्चानां गुणभूतानामणुभूतानां वा तत्त्वता न स्वीक्रियेत सतर्हि आक्सिजन—हाइड्रोजन—नाइट्रोजन—प्रभृतीनां परपरिकल्पिततत्त्वानामपि तत्त्वशब्देन व्यवहारो मिथ्यापरिकल्पितो निर्मूलो नितान्तमुच्छिन्नः स्यात्। वाष्प तरल कठिन स्वरूपभिन्नानामेषां परस्परभेदक धर्मविशेषसंयोगमन्तरेण भेदानुपपत्त्या तत्तदर्थं स्वरूपसमर्पकधर्म्मसंयोगाभ्युपगमस्य नाप्राप्त्या यौगिकतायाः नाप्राप्तत्वात्। सन्तिहि—आक्सि[1]जन — हाइड्रो[2]जननाइट्रोजन[3] — कार्बन[4] — क्लोरिन[5] — इत्येवं विधा-पञ्चभावा आप्याकाराः। अथ ब्रोमोनपदार्थस्तरलाकारः। इतरे पुनरायोडीन—सलफर—म्लिकण प्रभृतयः कठिना भावाः। तेषु वाष्पत्वसमर्पका स्तरलत्वसमर्पकाः कठिनत्वसमर्पकाः केचनस्वरूपधर्माः अन्तःप्रविष्टा इष्यन्ते न वा। नेष्यन्ते चेत् पदार्थेषु धर्मधर्मिव्यवहारोच्छेदादवैज्ञानिकत्वमापद्येत। अथवाऽवश्यं धर्मधर्मिभेदः प्रत्येतव्यः। कानस्टेंट —प्रापरटीज़ (Constant—Properties) संज्ञकानास्थिरधर्म्माणामपि धर्म्मितो भिन्नताया वैज्ञानिकनये वक्तव्यत्वात्। (Accidental-properties)=व्यभिचारिधर्माणां केमिकल(Chemical)संयोगवियोग(एनेलाइज़-Analyse) दर्शनाद्धर्मान्तरसंयोगेनतद्धर्मिणः अवस्ट्रेक्ट आइडिया (Abstract-idea) प्रकृतभावस्य वास्तव्यस्वरूपा विनाशोऽपि तत्रान्तरतो धर्मान्तर प्रवेश दर्शनाच्चावश्यं तत्रावकाशस्य (स्पेस-Space) मन्तव्यतया विभाज्यतायाः (Divisibility) संप्रत्ययाद् द्वैतप्रतीतेर्यौगिकत्व संप्रत्यय संभवात् तेषामपिहाइड्रोजन-प्रभृतीनां तेषां यौगिकत्व संभवात् तत्त्वशब्देन व्यवहारो विरुद्धः स्यात्। तस्मादेषां वैदेशिकानाम् आक्सिजन-हाईड्रोजन—तथा भारतीयानां पञ्चभूतानां वा तुल्यमतात्विकत्वं वा तात्विकत्वं वेति निष्पक्षपातबुद्ध्याविद्वद्भिर्विवेचनीयम्॥

अथ यदि स्वरूपधर्माणां यौगिकत्वापादकत्वं नेष्यते तत्तर्हि जलानां वायूनां वा तत्तत्स्वरूपसमर्पकस्य आक्सिजन संयोगस्यापि जलवायु स्वरूप समर्पकधर्मस्य यौगिकत्वापादकत्वं न संभवतीति वैज्ञानिकै. (Chemists) सम्यक् पर्य्यालोच्यमित्यावेदयामः॥ अथ यदि आक्सिजन-हाइड्रोजन-प्रभृतीनि तत्त्वानि सन्ति, ध्रुवं तर्हीमानि पञ्चभूतान्यपि तथैवोपनिषदा (Principle) सन्त्येव तत्त्वानीति सिद्धम्॥ यत्तुस्वरूपधर्माणामेषां गुणविशेषतया तेषां द्रव्यत्वाभावाद् यौगिकत्वापादकत्वं न संभवतीति कश्चित् साहसिकः प्रलपेत् तत् तेषां विज्ञानशास्त्रसिद्धान्तानभिज्ञानां वैज्ञानिकत्वाभावं सूचयति। गुणकूटस्यैव द्रव्यतायाः वैज्ञानिकनये सिद्धान्तात्। तस्मादिह पुनर्ब्रूमः-पञ्चभूतानां ये यौगिकत्वं मन्यमानास्तत्वतां नेच्छन्ति तेषां नये आक्सिजनप्रभृतीनामपि तत्त्वता विच्छिद्यते यौगिकत्वाविशेषात्। अथ येषां नये तानीमानि आक्सिजन प्रभृतीनि तत्त्वानि संभाव्यन्ते तैरिमानि पञ्चभूतान्यप्यवश्यं तत्त्वान्यभ्युपगन्तव्यानि।

अथ ब्रूमः-पञ्चभूतान्येवैतानि तत्त्वानि भावनीयानि न तु पञ्चभूतपृथक्त्वेनैषा माक्सिजन प्रभृतीनां तत्त्वतोपपद्यते। तेषां पञ्चभूतातिरिक्तत्वा संभवात्। तथाहि—

विश्वव्यापी १ आकाशः—ईथर (Aether)

वष्पविधाः २ वायु—[१]आक्सिजन, [२]हाइड्रोजन, [३]नाइट्रोजन, [४]कार्बन, [५]क्लोरीन्,
सौम्यः आप्यः याम्यः आङ्गिरसः भार्गवः

अग्निजनकानि ३ तेजः—[१]आयोडीन, [२]फ्लूरीन, [३]सलफर, [४]सिलीनियम, [५]सिलिकण, [६]बोरन्
ऊर्ध्वगामिनी [७]फास्फोरर्स, [८]टेल्युरियम, [९]आर्सेनिक।

तरलम् ४ आपः - ब्रोमीन।

घनभूतानि ५ पृथ्वी—सिस-रेड ( ), प्रभृतयः पञ्चाशद् [५०] घन पदार्थाः।

इत्येवमेषां पाञ्चभौतिक धर्मोपेतत्वात् पञ्चभूतेष्वेवैतेषामन्तर्भावोद्रष्टव्यः। भारतीयविज्ञानानुसारेण पञ्चभूतरहस्यानभिज्ञत्वात् त्वेतानि पञ्चभूतेभ्यः पृथक्त्वेन परिकल्पयन्ति। वस्तुतस्तु नैतानि पञ्चभूतेभ्योऽतिरिच्यन्ते—इति सुदृढं विवेक्तव्यम्। शब्दभेदेनप्रतिपत्ति भेदेऽपि वैज्ञानिकधर्म्मभेदाभावादेषां पञ्चभूतवर्गे एव समावेशात्॥

अतश्चेदं वैज्ञानिकत्वाभिमानिभ्यो विद्वद्भ्यः सविनयं निवेदयामः—भारतीयविज्ञानशास्त्रे परिभाषाया नितान्तमनभिज्ञत्वादेवैते पञ्चभूतविषयाः क्षुद्राक्षेपाः कैश्चित् क्रियन्ते तैरिह सादरं परिश्रमेणेदं भारतीयविज्ञान शास्त्र मधिगन्तव्यं परीक्षणीयंचेति॥

(पदार्थानां निर्जीवत्वखण्डनम्।)

यदप्याहुः—इदं परिविस्तृतं जगत् सजीवैर्निर्जीवैश्चैश्चपदार्थैरभिव्याप्तमस्तीति तत्र निर्जीवानां पदार्थानां विश्वस्मिन् सत्ता नितान्तमवैज्ञानिकी। भारतीयवैज्ञानिकानां सिद्धान्ते सर्वेषामेवार्थानां सजीवत्वमेवास्तीति सुदृढं परीक्ष्य विश्वसितव्यम्। तथाचाहुः—

अंगुलस्याष्टभागोऽपि न सोऽस्ति मुनिसत्तम।
न सन्ति प्राणिनो यत्र कर्म्मबन्धनिबन्धनाः॥ इति विष्णुपुराणे।

श्रूयते च –

सदेवेदमग्रमासीत् तत्तेजोऽसृजत। तदपोऽसृजत। ताअन्भोसृजन्त। सेयं देवतेमास्तिस्रो देवता अनेनैव जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य नामरूपे व्याकरोद्—इत्यादि॥

तत्र आपो वायुः सोम–इति भृगवः। अग्निः–वायुः–आदित्य–इत्यङ्गिरसः। तथाचैतस्मिन सोमे सम्परिष्वक्तोऽयमग्निश्चेतनातत्त्वं क्रमेणाविर्भावयति तदिदं जीवतत्त्वं नाम। तस्याग्नेः क्रमेण विकासात् त्रेधा जीवरूपं विवर्तते–वैश्वानरः–तैजसः–प्राज्ञ इति। यानीमानि निर्जीवसत्त्वानीत्यभिमन्यमानैः–अपरीक्षकैः साधारणमनुष्यैरसंज्ञत्वेन प्रतिपद्यन्ते तेषां वैश्वानरोग्निरात्मा तस्यैव

तेषु प्राणाधायकत्वात् । तेनैवैतानि सत्त्वानि सजीवानि ॥ १ ॥ अथ यानीमानि ओषधिवनस्पतिरूपाण्यन्तः संज्ञान्युद्भित्सत्त्वानि तेषां वैश्वानरश्च तैजसवायुलक्षणश्चाग्निरात्मा । तयोस्तेषु प्राणाधायकत्वात् । तेनैवैतानि सत्त्वानि सजीवानि ॥२॥ अथ यानीमानि चेतनत्वेनाभिमतानि ससंज्ञानि सत्त्वानि तेषां वैश्वानरश्च तैजसवायुलक्षणश्च प्राज्ञेन्द्रलक्षणश्चाग्निरात्मा । तेषां त्रयाणां तेषु प्राणाधायकत्वात् । तेनैवैतानि सत्त्वानि सजीवानि॥३॥अतश्च सर्वाणीमानि सत्त्वभूतानि सजीवान्येवोपपद्यन्ते न तु निर्जीवाः पदार्था विज्ञातव्याः । चेतनाया भृगुष्वङ्गिरस्सु च सर्वत्राभिव्याप्तत्वात् । बाह्यन्तरिन्द्रियाभिभवात् सुषुप्तेषु जीवेषु चेतनाया अनुपलब्धिवदेषु जडत्वेनाभिमतेषु सत्त्वेषु चेतना नोपलभ्यते-इत्यन्यत् । किन्तु नैतावता तेषु जीवचैतन्यं नास्तीति प्रतिपत्तव्यम् ॥ इदानींतन वैज्ञानिकेषु जीवोपलब्धिसाधनयन्त्राणामद्य यावदनुपलम्भात् तत्परीक्षायाः कर्तुमशक्यत्वेऽपि नैतावता जीवस्तेषु नास्त्येवेति प्रतिपत्तिरवकल्पते । परीक्षोत्तरमवश्यं सर्वत्र सजीवतायाः प्रत्यक्षीकारसंभवात् ॥

आमिश्रितैकजातीय परमाणुनां पञ्चभूततत्त्वातिरिक्तानामवैज्ञानिकत्वम् ।

अथ यत्पुनरिदानींतनै वैज्ञानिकै स्त्रिविधाः पदार्था मन्यन्ते । १-केमिकलएलीमेण्ट (Chemical element) २-केमिकल-कम्पौण्ड, (Chemical compound) तथा ३-मेकेनिकल मिक्श्चर (Mechanical mixture)-इति तेऽमी त्रिविधाः पदार्था भारतीयैरपि वैज्ञानिकैर्यथायथं स्वीक्रियन्ते-मूलप्रकृतिरूपस्य मौलिकतत्त्वस्यामृतशब्देन प्रकृतिविकृतिरूपस्य यौगिकतत्त्वस्य ब्रह्मशुक्रशब्दाभ्यां,तथा विकृतिरूपस्य योगजपदार्थस्य भूतसंघात शब्देन व्यपदेशात् । किन्तु तत्रैतावान विशेषो दृश्यते । भारतीय वैज्ञानिकानां वेदविज्ञाने तावदेभ्यस्त्रिभ्योऽतिरिक्ता अपि पदार्थाः परीक्षाभिः सुदृढं प्रत्यक्षीकृता अभ्युपगम्यन्ते-अमृतम्[1]-विश्वसृड्ब्रह्माणि[2]-पञ्चजनब्रह्माणि[3]-पुरञ्जनशुक्राणि[4]-पुराणि[5] चेति । तत्रैतानि प्रथमानि त्रयाणीदानीन्तनैर्विज्ञानविद्भिर्न ज्ञायन्ते । परीक्षासाधनालाभात् तत्परीक्षां कर्तुमसमर्थत्वात् । तत्रामृतानि ऋतरूपाणि । तेषामशरीरत्वादहृदयत्वाद् एलीमेंट (Element) शब्देनैतानि व्यपदेष्टुं न शक्यन्ते । एलीमेण्ट शब्देन व्यपदिष्टानाम् ऐटम (Atom) संज्ञक परमाणूनां परिच्छिन्नतया सहृदयत्वेनाभ्युपेतत्वात् । एषु चामृतसंज्ञकतत्त्वेषु स्थानावरोधकता = इम्पेनीट्रेबिलिटी (Impenetrability) नास्ति ॥ यत्तु अद्यतनवैज्ञानिकाः= (Chemists) इम्पेनीट्रेबिलिटी इति सर्वपदार्थानां साधारणलक्षणं (General-Definition) वदन्ति तदेतदेषां साइंसविद्याया इदानीं यावदपरिपक्वतामपूर्णतां च लक्षयति । एकैकबिन्दौ सहस्रशः पदार्थानां वैज्ञानिकनये सामञ्जस्येन विद्यमानत्वात् ॥ अथ यानीमानि विश्वसृट्संज्ञकानि ब्रह्मतत्त्वानि तानि सत्यशब्देन व्यपदिश्यन्ते परिच्छिन्नतया सशरीरत्वात् सहृदयत्वाच्च । तानि पञ्चधा विभज्य विज्ञायन्ते-प्राणरूपाणि[1], आपोरूपाणि[2],वाग्रूपाणि[3],अन्नरूपाणि[4],अन्नादरूपाणि[5] चेति । पञ्चाप्येतानि द्विविधानि-विशुद्धैकरूपाणि, पञ्चीकृतरूपाणि चेति। त्रिविधान्यप्येतानि नूतनतरैरपि विज्ञानविद्भिरिदानीं यावदपरिचितानि॥

अथ यानीमानि चतुर्थविधानि पुरञ्जनशुक्राणि—तान्येव परमाणुशब्दानि । तेषां भारतीयविज्ञानसिद्धान्ते अन्तर्यामसम्बन्ध–बहिर्यामसम्बन्धाख्यां द्वेधा यौगिकत्वाभ्युपगमेऽप्यद्यतना द्वेधा विभागमिच्छन्ति — (१) शुद्धरूपं मूलतत्वम् = (केमिकल एलिमेंट) इत्येकम् । (२) रासायनिक यौगिकम् = (केमिकल कम्पाउण्ड) इति द्वितीयम् । वस्तुतस्तु उभयविधमपीदं यौगिकमेव रूपं विजानीयात् । केमिकल एलीमेण्ट विभागे अन्तर्यामसम्बन्धेनारम्भक तत्वद्वय संयोगात् तयोः पृथक्त्वानुपलम्भेनैकद्रव्यत्वस्य मिथ्याभिमानात् । तेषां केमिकल–एनेलाइज =(Chemical Analyse) रासायनिक विश्लेषणस्याद्ययावत् । कर्तुमशक्यत्वात् पृथक्त्वानुपलम्भ इति विज्ञेयम् ॥ पुरञ्जनानीमानि परमाणुजातान्येव संहत्यस्कन्धरूपाणि पुराणि जायन्ते । तानीमानि कम्पाउण्डबाडीइत्युच्यन्ते-(Compound body) चतुर्विधाश्चैव परमाणूनां परस्परतः सम्बन्धा भवन्ति–हृदग्रन्थिबन्धः, चितिबन्धः, संशरबन्धः सहचरबन्धश्चेति तत्र १—हृदग्रन्थिबन्धे द्वयोरेकबिन्दौ समावेशादपृथक् प्रत्ययादिमानि केमिकल–एलिमेण्ट–तत्वानि जायन्ते । तेषां यौगिकत्वेपि मौलिकैकद्रव्यत्वाभिमानः प्रवर्तते । अथ २–चितिबन्धेनैषां परमाणूनां समावेशे तेषां विश्लेषणस्य (एनेलाइज–Analyse) व्यापारस्य कर्तुं शक्यतया यौगिकत्वाभिमानः संभवतीति तानीमानि केमिकल–कम्पौण्डबोडी शब्देन व्यपदिष्टानि भवन्ति । ३—अथ संशरबन्धे भौतिकमिश्रणरूपः पिण्डो जायते—यथा लोष्टादिः । ४—सहचरबन्धे तु संघात सत्त्वेपि पिण्डत्वव्यवहारो नोपपद्यते । इति हि भारतीयः परमप्राचीनो वैज्ञानिकः सत्यसिद्धान्तः ॥ तदनुसारेण पञ्चभूततत्वानामिव (ऐटम–Atom) परमाणूनां आक्सीजन प्रभृतीनां द्वानवति (९२) विधानां पदार्थानामपि यौगिकत्वमेव संसिद्धं भवतीति वैज्ञानिकैर्विद्वद्भिर्निष्पक्षपातं पर्य्यालोच्यम् ॥

❀ इति ❀